I-H-5461

DAUD

चांदायन

[दाऊद-विरचित प्रथम हिंदी सूफ़ी प्रेम-काव्य]

संपादक

माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०

निदेशक, क० मु० हिंदी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ, आगरा

प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा

प्रकाशक :
रामजी गुप्त,
प्रामाणिक प्रकाशन,
३५, लाजपत कुंज,
सिविल लाइन्स, आगरा

समस्त प्रकाशनाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण, मई, १९६७
११०० प्रतियाँ
मूल्य : २० रुपये

B953836

मुद्रक :
दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स
दरेसी नं० २, आगरा

प्रस्तावना

'चांदायन' की फ़ारसी-अरबी में लिखी हुई कतिपय त्रुटित प्रतियों में बिखरे हुए ८० कडवकों को नागरी में लिपिबद्ध कर प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास अब से सात-आठ वर्ष पूर्व इन पंक्तियों के लेखक ने किया था। इसके अनंतर क० मु० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ के तत्कालीन निदेशक डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने फ़ारसी में लिपिबद्ध भोपाल की एक प्रति के कडवकों को, जो प्रिंस ऑव वेल्स म्यूज़ियम बंबई में थी, नागरी में लिपिबद्ध किया था। ये दोनों प्रयास एक ही जिल्द में उक्त विद्यापीठ द्वारा १९६२ में 'चंदायन' नाम से प्रकाशित हुए थे। तीन वर्षों के लगभग हुए डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त ने जॉन राइलैण्डस लाइब्रेरी, मैनचेस्टर की एक प्राचीन प्रति, तथा अन्य कुछ नवीन संपादन-सामग्री के साथ उक्त प्रतियों का भी उपयोग करते हुए, जो मेरे और डॉ० विश्वनाथ प्रसाद द्वारा प्रस्तुत किए हुए पाठों में प्रयुक्त हो चुकी थीं, 'चंदायन' नाम से रचना का एक पूर्णतर पाठ प्रस्तुत किया। इन प्रयासों ने हिंदी सूफ़ी प्रेमाख्यान परंपरा की प्रथम रचना के संबंध में जहाँ विचारणीय सामग्री प्रस्तुत की, वहाँ रचना के एक ऐसे आलोचनात्मक संस्करण के अभाव की ओर भी निर्देश किया जिसको रचना और उसकी परंपरा के अध्ययन के लिए एक अधिक निश्चयपूर्ण आधार बनाया जा सकता। प्रस्तुत प्रयास इसी लक्ष्य को सामने रखते हुए किया गया है।

ऊपर उल्लिखित प्रतियों के अतिरिक्त और उन सब की अपेक्षा पूर्णतर रचना की एक प्रति जयपुर के एक साहित्य-सेवी श्री रावत सारस्वत के पास थी और यह प्रति नागरी में थी, जबकि शेष समस्त प्रतियाँ फ़ारसी-अरबी लिपियों में थीं। लगभग छः मास हुए इसी पाठ-शोध के प्रसंग में मैंने श्री सारस्वत को रचना के एक कडवक का पाठ अपनी प्रति से भेजने को लिखा, तो उन्होंने न केवल उसका पाठ मुझे भेजा, बल्कि मेरी पाठ-शोध-निष्ठा को देखकर उन्होंने लिखा कि यदि मैं रचना का आलोचनात्मक पाठ-संपादन करने को प्रस्तुत हूँ तो वे उक्त प्रति को दे सकते थे और तदनंतर उन्होंने उक्त प्रति विद्यापीठ को दे भी दी।

इस अंतिम प्रति के उपयोग के लिए मैं आगरा विश्वविद्यालय के विद्यानुरागी कुलपति, जिसका उक्त विद्यापीठ एक अभिन्न अंग है, डॉ० श्री रञ्जन जी

का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने प्रस्तुत कार्य के लिए उक्त प्रति के उपयोग की अनुमति दी। शेष प्रतियों में से कुछ के फ़ोटोग्राफ़ का उपयोग मैं अपने पहले के प्रकाशित कार्य में कर चुका था, प्रिंस ऑव वेल्स म्यूज़ियम में सुरक्षित भोपाल की त्रुटित प्रति के फ़ोटोग्राफ़ जो डॉ० विश्वनाथ प्रसाद द्वारा प्रस्तुत किए हुए रचना के पूर्वोल्लिखित संकलन में प्रयुक्त हो चुके थे, विद्यापीठ में सुरक्षित थे, राइलैण्ड्स पुस्तकालय मैनचेस्टर की प्रति के फ़ोटोग्राफ़ राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के पुस्तकालय में मुझे उस समय मिल गए थे जब मैं चार वर्ष पूर्व वहाँ पर था, मसाचसेट्स के होफ़र-संग्रह के दो पृष्ठों के अक्स 'मध्ययुगीन' हिंदी प्रेमाख्यान के लेखक और मेरे प्रिय शिष्य डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय ने दो-ढाई वर्ष पूर्व भिजवाए थे, जब वे शिकागो विश्वविद्यालय में अमेरिका में थे। इन अन्य सामग्रियों के भी स्वामियों और उपयोग-सूत्रों का मैं हृदय से आभारी हूँ।

सुंदर छपाई के लिए मैं स्थानीय दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स, और विशेष रूप से उसके व्यवस्थापक श्री पुरुषोत्तमदास भार्गव को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने बड़ी तत्परता के साथ पुस्तक छापी है। कुछ भूलें रह गई हैं, जो पुस्तक के अन्त में शुद्धि-पत्र में दी हुई हैं। पाठक कृपया इन्हें शुद्ध कर पढ़ेंगे।

प्रस्तुत प्रयास भी उसी परंपरा में है जिसमें लेखक के अधिकतर पूर्ववर्ती प्रयास हैं—रचना के निर्धारित पाठ को देते हुए संदर्भ, शीर्षक, पाठ-टिप्पणियाँ, पाठांतर, अर्थ और शब्द-कोश देने के अतिरिक्त भूमिका में रचना से संबंधित समस्त समस्याओं पर एक मौलिक प्रकाश डालने का यत्न किया गया है। इस प्रयास में स्वीकृत पाठों के उन अंशों को जिनके पाठान्तर दिए गए हैं अंकों से चिह्नित करने के स्थान पर उलटे कामों से चिह्नित किया गया है, जिससे इस भ्रम की संभावना न रहे कि पाठांतर स्वीकृत पाठ के किन अंशों के हैं। आशा है कि इस नवीनता से पाठकों को यथेष्ट सुविधा होगी।

आगरा
८-५-६७

माताप्रसाद गुप्त

विषय-सूची

		पृष्ठ-संख्या
भूमिका	...	१-७२
१. दाऊद और उसके सम-सामयिक	... ...	१
२. रचना-काल और स्थान	... ...	३
३. रचना का नाम-रूप	... ...	४
४. रचना की कथा और उसका आधार	... ...	१६
५. रचना का संदेश	... ...	३६
६. रचना की संपादन-सामग्री	... ...	५२
७. रचना की लिपि-परंपरा	... ...	५६
८. रचना के संपादन-सिद्धान्त	... ...	५८
९. रचना की भाषा	... ...	६०
चांदायन (पाठ, पाठांतर तथा अर्थ)	...	१–३९२
परिशिष्ट (प्रक्षिप्त कडवक)	...	३९३–४२६
शब्द-कोश	...	४२७–४४४

प्रियवर

राम तथा श्याम

को

सस्नेह

७८. (३३१ ई)

पाकुरि काटि लोर चिय रचा। झाप देइ मैं राषौ बचा।
तिहि षिन येकु गारुरी आवा। कनक जप देकैं चांद जगावा।
सुरिजु पाव गारुर कै परा। चांद अमावस पून्यों करा।
रहसा सुरिजु चांद गैं लाई। सुरिजु चांद लै माथ चराई।
पानी सुरिजु वारि सिर पीता। पून्यो चांद गारुरी कीता।
मरत्यों तें रु जगायो जब हौं करौं बधाई।
तोर पसाइ चांद मैं पाई गहनै गही छुड़ाई॥

सन्दर्भ—बी० १०६८-१०७०।

म० यहां पर अत्रुटित है और उसमें यह कडवक नहीं है, किन्तु इस प्रसंग के अन्य दो कडवक म० में भी हैं, केवल यही नहीं है, इसलिए लगता है कि यह कडवक म० अथवा उसके किसी पूर्वज में प्रतिलिपि करने से रह गया। यह कडवक भी प्रक्षिप्त है—दे० ३३१ आ की सन्दर्भ-टिप्पणी।

शब्द-कोश

इस शब्द-कोश में केवल उन्हीं शब्दों को संकलित करने का यत्न किया गया है जिनके संबंध में भाषा अथवा अर्थ-संबंधी स्पष्टीकरण आवश्यक था, और उन शब्दों के भी प्रयोग के कुछ ही स्थल निर्दिष्ट किए जा सके हैं। आशा है कि इस प्रयास से रचना के प्राचीन भाषा-रूप और अर्थ को समझने में सहायता मिलेगी। संख्याएं क्रमशः कडवकों और उनकी पंक्तियों की हैं।

अउ : अओ : अतस्—यहां से, इसी समय से २३१.१। अउ : वह, ३३४.७। अउंछ् : आउंछ् : आकुंच्—आकुंचन करना, सिमटना १३१.७ (तुल० 'उंछ्')। अउर : अवर : अपर—और, अन्य ५९.६, १४४.७, ३८७.१। अंकवार। अंकवारी : अंकपाली—आलिंगन ७५.५, ७५.६, २६५.७, ३९४.५। अंकुरी : अंक+डी—आंकड़ी, जिसकी सहायता से बरहा अंटकाया जाता था २८०.३। अंगिराय्—अंगडाई लेना ६३.१। अंगीठी : अग्नि+इष्टिका ५१.३। अंछ्—खिचते हुए होना, आधिक्य के साथ होना २८.७। अंथव् : अस्तम्+इ—अस्तमित होना, शान्त होना ३०९.६ (दे० आंथव्)। अंबराई : आम्रराजि १९.१। अंबराउं। अंबरांव : आम्राराम २५९.४। अकरक : कलंक २२३.२, २२८.५। अक्खत : अक्षत—समूचा चावल १६५.५, २४४.५। अखार : अक्खाड : अक्षवाटक—अखाड़ा, मल्ल-भूमि १११.६। अगर : अगुरु ३४१.४। अगियारि : अग्गिआरिआ : अग्निकारिका—अग्नि कर्म २४४.३। अगुर : आकर (?)—आकर पदार्थ, जिससे अन्य पदार्थों की रचना होती है २.७। अगुसारय् : अग्र+सारय्—आगे बढ़ाना, आगे चलाना १२६.१। अघाय् : अग्घव्—तृप्त होना १६१.७, १७२.३। अचंभा : अत्यद्-भुत (?) १७१.१। अचगर—औद्धत्यपूर्ण, अन्यायपूर्ण ३०१.६। अजोर् : योजय्—जोड़ना ७५.३। अठाउ : अस्थान २७४.२। अडागर : अडक्खिय+डा—बिना कुचला हुआ, समूचा २७.४, १४७.३। अतिरेख : अतिरेक—आधिक्य ६६.५। अथाई : आस्थानिका—गोष्ठी २६.१। अधारी—आसन-क्रिया करने के समय हाथों को टेकने की एक लकड़ी १६४.३। अनत : अन्यत्र

४४.२ । अनवट : अंगुष्ठ : पैर के अंगूठे का आभरण-विशेष ३२८.६ । अनवन : अण्ण+वण्ण : अन्य+वर्ण—अनोखा, अद्भुत ३०.२, ८८.१ । अनारी : अणाढिय : अनादृत—तिरस्कृत ६५.४ । अनियार—अनी (बर्छी की-सी नोक) वाला ७६.७, ३२४.२ । अनीं : अनीक—सेना १२२.५ । अपान : अप्पाण : आत्म—जीव ३१५.७ । अबेर : अवेला—देरी ६०.५ । अभिर्—भिड़ना २६२.२ । अभुवाय् : अभ्युपपद्—कृपा अथवा आश्रय प्राप्ति के लिए [इष्ट देवता की] सेवा में पहुंचना [अथवा उसे व्यक्त करने के लिए किसी नावित द्वारा सिर का हिलाया जाना] १७६.६, २६१.४ । अरकत : आरक्त ७६.३ । अरग्—चुप होना २६०.१ । अरघ : अर्घ—पूजा की सामग्री, पूजा का आयोजन १४१.६ । अरथ : अर्थ—धन ३४.४ । अरसी : आदर्शिका—आईना ७३.४, ३३२.४ । अलख : अलक्ष्य—जो दृष्टि में न आ सकता हो ३१२.५ । अवगाह्—जल में प्रविष्ट होना ६८.७ । अवगाह : अवगाढ—गंभीर, गहरा २१.२, ७८.६, २०५.५ । अवघट : अप+घट्ट—बुरा घाट २८६.७ । अवधार् : अवधारय्—निश्चय करना ३६६.३ । अवसान : अवसन्न—अवसादपूर्ण २२४.३ । अवास : आवास ३६७.५ । असकिति : असत्कृत्य—असत्कार्य ३७.३ । असरार : असराल—निरंतर १६४.३ । असरौ : आश्रय—आसरा ६६.३ । अस्तानी : अस्त्यान—उपेक्षा, तिरस्कार २३४.१ । अस्थन : स्तन ७७.७, १६६.३ । अहिआन्=अलिज्ञान करना पहचानना ३३१.२ । अहेर : आखेट २४३.७ ।

आएस : आदेश—नमस्कार, ['आदेश' कहकर नमस्कार करने वाला] योगी १६७.१ । आंक : अंक—चिह्न, पहिचान ६१.२ । आंत : अंत्र—आंत ७८.५ । आंथव् : अत्थम् : अस्तम्+इ—अस्त होना २४.५ (दे० अंथव्) । आंब : आम्र—आम २६१.७ । आख् : अक्ख् : आ+ख्या—कहना २६५.४, ३११.६ । आगर : अग्र—बढ़ा-चढ़ा, बढ़कर २०.६, ३६.६, २४१.६ । आछ् : अस्—होना ३२.६, ७२.४, १७५.४, २५६.७ । आछरि : अप्सरस्—अप्सरा ८२.३, २४६.१ । आथि—थी ७५.४ । आधि—मानसिक व्यथा ४७.१ । आन् : आ+नी—लाना ४६.१, २३६.४ । आन । आंन : अन्य और, दूसरा ११३.३ । आरौ—आहट २२५.४ ।

ईंगुर : हिंगुल—सिंगरफ २४.३, ३०.१ । ईठ : इष्ट—२५४.५ ।

उंछ् : आकुंच—आकुंचन करना, गात्र—संकोच करना १६८.३, ३६३.३ (तुल० 'अउंछ्') । उग् : उग्ग् : उद्+गम्—उगना, निकलना १३६.६ । उघर् : उग्घड् : उद्+घट्—खुलना २४१.५ । उघार् : उग्घाड् : उद्+

घाटय्—खोलना १५७.७ । उचाट : उच्चाटन—कार्यादि में अरति २४६.४ । उचाव् : उच्चय्—उठाना ५४.४ । उजार : उज्जड [दे०]—ऊजड, निर्जन स्थान ३२२.५ । उजियार : औज्ज्वल्य—प्रकाश, निर्मलता ४१.३, ७१.३ । उजियार : उज्ज्वल—प्रकाशपूर्ण २७५.७ । उजियारि । उजियारी : यथा 'उजियार' : १०१.७ । उटव्—साहस करना, बाज़ी लगाना १८५.४, २१४.२ । उतराय् : उत्तर् : उत्+तृ—[पानी आदि से] ऊपर या बाहर आना ३८०.७ । उदिनल : उदिण्ण : उदीर्ण—उदीयमान ६६.४, १८४.१, २७८.७ । उदेग : उद्वेग २४६.४ । उधस् : उद्ध्वस्—उध्वस्त होना, तितर-बितर होना २२०.३ । उपटाव् : उत्पातय्—उठाना, उमडाना ३२२.२ । उपन्–उत्पन्न होना २१६.६ । उपराज् : उपरच्—उत्पादित करना १८५.२ । उपहर : उप्पेहड [दे०]—आडंबर युक्त २४३.२ । उपाय । उपाव् : उप्पाअ् : उत्पादय्—निर्मित करना ७७.५, १६४.५ । उबर् : उव्वर : उद्+वृ—शेष रहना, बच रहना १२६.७ । उबार् : उव्वार : उद्+वर्त्तय्—बचाना १३६.३, २५७.४ । उभर् । ऊभर—उब्भ (ऊर्ध्व) होना, उठना १२६.१ । उभार् : उब्भाड्—उब्भ (ऊर्ध्व) करना, उठाना ३२६.५ । उरेह् : उल्लिख्—रेखांकन करना १६३.१ । ऊतर : उत्तर ६४.४ । ऊबट : उव्वट : उद्+वर्त्म—अटपटा मार्ग २८१.४ ।

ऊभ : उब्भ : ऊर्ध्व—उठा हुआ २७७.४, २६१.७ ।

एकसर—अकेला ३५१.६ । एत : इयत्—इतना ७३७ ।

ओछ : उच्छ : तुच्छ १२१.३ । ओर : अवर : अपर—अन्य [छोर] २४.५, १७८.३ । ओरग् : ओलग् : अवलग्—सेवा करना ११२.१ । ओरगाव्—सेवा या चाकरी कराना ३०२.५ । ओरगावन—सेवा, चाकरी ३२.६ । ओरमाव् : ओलंब : अव+लम्ब्—लटकाना, नीचा करना ६५.३ । ओरवानी–ओलती ३४३.५ । ओरहन : उपालम्भ २६६.१, २७२.५ । ओल्लार्—लिटाना १५४.१ । ओहट : अपघट्टक—दूर का स्थान ३६.२ ।

कउ : कदा—कब २२३.४ । कंडहार : कर्णधार २०५.६, ३६३.३ । कंवर : कमल २५६.७ । कक्कर : कर्कर १४८.२ । कखाव्—कांखों में से करते हुए धारण करना ३६५.४ । कचपची : किचि-पचिअ : कृत्ति-प्रचित—कृत्तिका से समृद्ध [नक्षत्र माला] १६२.४ । कचोर : कच्चोल—कटोरा, प्याला ७५.२, १३७.४ । कट—शरीर-यष्टि ३३.६ । कटवां—काटकर पकाया जाने वाला पदार्थ १४५.२ । कटार : कर्त्तर १२५.४ । कत : कुतः—क्यों (?) ६१.५ । कनइ—पास ११६.२, १७१.४ । कनिक : कणिक—आटा ४२.६ । कवि : काव्य १४४.६ । कवित : कवित्व : काव्य १८.१ । कबिलास :

कैलास—शिवलोक ३०.७ । करंडी : करण्ड+इका—टोकरी, डलिया, पेटिका १६५.५, २७०.१, ३८४.३ । करटा : करट्ट [दे०]—अपवित्र अन्न खाने वाला ब्राह्मण २५४.५ । करन : करण—अवयव ६३.५ । करवत : करपत्र—आरा ३५७.३ । करस : कलश ३०.४, २४८.४ । करह : कलह १३३.५ । करा : कला १३८.६, ३५६.४ । करि : कडि : कटि—कमर ७६.२, ७६.७ । करि । करिया : कट (बांस, काष्ठ)+इका—करिआ, पतवार ५३.२, ७६.७, २८८.५, ३३३.३, ३७४.३ । करी : कलिका ८२.४, २७०.१ । करुव : कटुक-कडुवा १४६.२ । कलाई : कलाचिका ८४.५ । कसमर : कश्मल—पाप, कालिमा ३७५.१ । काइ । काइं : किम्—क्या, क्यों ६८.७, ३६६.७ । काउ । काऊ : कआ+उ : कदा+अपि—कभी भी ३८.२, ४४.३, १३४.७ । कांख : कक्षा—बगल ३६५.३ । कांदव : कर्दम—कीचड़ ८६.६ । कांवरि : कम्बि+डी—बांस की वह फांटी जिसके दोनों छोरों पर लटका कर पिटक आदि ढोए जाते हैं ३३७.३ । कागरूक—उल्लू पक्षी १६.५ । काछा : कक्षा : कच्छा—कमर पर बांधने का वस्त्र, धोती ८६.५ । काढ़ : कड्ढ़ : कृष्—खींचना, निकालना ५०.२ । कानि—लिहाज २८५.३ । कापर : कप्पड : कर्पट—कपडा २६.४, ३३७.१ । काबि : काव्य ३२६.४ । कारंक : कलंक—कालिमा, कालिख २७१.५ । कारन । कारुन : कारुण्य १५६.१, ३१०.३ । किंगिरी : किन्नरी—एक प्रकार की सारंगी १६४.५ । कित : कुत्र—कहां २३०.६ । किनरप : कन्दर्प—कामदेव ४७.२ । कियाह : कयाह—जाति-विशेष का घोड़ा ७५.४ । किर : किल—निश्चय ही, प्रायः पादपूर्ति के लिए प्रयुक्त २३८.५, ३८६.१ । किरीज : किरिंज—बांस का टोकरा २८१.२ । कींन बान : क्रयेण-वर्ण—क्रय क्रिया जाने वाला बाना (पदार्थ), सौदा १५६.१ । कीनर : किन्नर—रूपवान् पुरुष २८.५ । कीर : कील ५६.३ । कुंडर : कुण्डल १३७.१ । कुंबिलाय् । कुंमिलाय् : कुड्मलाय्—कुडमल की भांति हो जाना, सिकुड़ जाना, मुरझा जाना १३८.३ । कुंवर : कुमार—कुमार-भुक्त, गुज़ारेदार २६.७ । कुर : कुल २६.१, २६.७, ४५.६, ५१.१ । कुरल्—कूजन करना २२.६ । कुरुंज : क्रौंच—पक्षी-विशेष २२.५, ३६३.४ । कुवडा : कूप+डा—कुंवा २६३.२ । कुवान : कुवर्ण—हीन वर्ण का ८७.४ । कुसर : कुशल १००.२ । कुसियारा : कोष—गोझा, गुझिया ४०.२ । कूंकूं : कुंकुम—केसर ३१.४, १४५.५ । कूंज : क्रौंच—पक्षी-विशेष १४६.२ । केत । केतिक : कियत्—कितना ८०.४, २५४.२, ३३६.७ । केर [दे०]—संबंध, सापेक्षता २४२.१ । केरि : केलि २२.१ । केवच्छ : कपिकच्छु—एक प्रकार की रोएंदार फली जिसके स्पर्श से खुजली होती है १८२.१ । कोंप : कुड्म—कोंपल ५७.६ । कोटवार : कोट्टपाल—नगर अथवा गढ़ का रक्षक २४.७ । कोठा : कोष्ठ—प्रकोष्ठ ३६५.५ । कोठार : कोष्ठागार—नाज का संग्रहागार ३८३.१ । कोड : कोड्ड [दे०]—खेल-कूद २८.६, ५६.३, २६७.४ । कोरि : कोडि : कोटि—करोड़ १३०.३ । कोह : क्रोध ३८६.६ । कोहाय्—क्रुद्ध होना, रोष करना ४४.७ । कोही : कोहिल्ली [दे०]—तापिका, तवा २३०.४ ।

खंड—कथा का अंश ६४.६, ३२६.४ । खंडवानी : खण्ड+पानीय—पानी में खांड का घोल १५१.१ । खंडौर : खण्ड+पूर । खण्ड+वर्त्तक—खांड (शक्कर) का लड्डू १६४.५ । खंध्—गंध देना २७.२ । खंधाई—गंधी २५.३ । खजहजा : खाद्य+भ्रज्ज्य+क—खाद्य (वे पदार्थ जो अपने प्रकृत रूप में खाए जाते हैं) तथा भ्रज्ज्य (वे पदार्थ जो भून कर या तल कर खाए जाते हैं) : १५२.७, २१३.३, ३३७.५ । खभार : क्षोभ—अशांति १३६.१, ३८२.१ । खरबार : खल्लवार : बड़ा पेटक, पेटारा ३३८.५ । खरी : खडिआ : खटिका—खडिया मिट्टी ३३२.२ । खलीती : स्खलित—बल अथवा साधन से हीन २१६.६ । खस् [दे०]—गिरना ३१०.६ । खाई : खाति—खाई २३.१, ३८१.६ । खांड : खड्ड : खड्ग—खांडा २०२.४ । खांब : स्कम्भ—खंभा ७१.४ । खिरउरा : क्षीर+पूरक । क्षीर+वर्त्तक—दूध का लड्डू ४०.२ । खिस् : दे० :—गिरना २३.७ (दे० 'खस्') । खीर : क्षीर १४६.१ । खीरोदक : क्षीरोदक—एक प्रकार का श्वेत झिलमिला वस्त्र १५३.१ । खुट् : क्षी—क्षय होना खंडित करना ६०.१, २१७.२, ३८८.६ । खुरुहुरी : क्षुद्र फली २७.६ । खूंट—टुकड़ा १४२.५ । खूना : क्षुण्ण—मर्दित-चूर्णित [शरीर वाले साधु] २०.२ । खेम—कुसर : क्षेम-कुशल ३३५.१ । खेर । खेरा : खेडय : खेटक—जन-समूह, गांव १३०.४, २५२.६ । खेरी : खेटिका—फलक, ढाल ११०.४ । खेल्—क्रीड़ा करना २७८.१ । खेवट : कैवर्त्त—केवट २८७.२ । खेह—धूल ३१४.३ । खोंपा—सिर के बालों का जूड़ा १६५.४ । खोर् : खोड् [दे०]—अंग—मार्जन करना २१.५ । खोरि—त्रुटि, दोष ३१४.७ । खोरी—गली २५.६ । खौंद : खाविन्द [फ़ा०]—स्वामी, पति १०.७, ११.१ ।

गंडुवा : कन्दुक—तकिया १६६.१ । गर—गरगच (?), वह टीला जो किसी गढ़ के बाहर उसके भीतर लक्ष्य-वेध करने के लिए बनाया जाता है ६२.१ । गरुव : गुरु+क—भारी २३३.१ । गह : ग्रह—ग्रहणीय [पेय] ७५.२ । गहबर—भाव-पूरित १.७ । गांग : गंगा २२७.७ । गाज् : गज् : गर्ज्—गर्ज्न करना ८७.१ । गाढ : गड्ढ : गर्त्त—गड्ढा ६२.१ । गारि :

गल्ल—बात १२०.४। गारुरि : गारुड—सर्प के विष को मंत्रादि के द्वारा उतारने वाला ६५.४। गास : ग्रास—कवर १४६.४। गियं : ग्रीवा ५०.३। गुन् : गुणय्—विचार करना २३६.१। गुन : गुण—रस्सी, डोरी ६७.१। गुनियारी—गुणनीय वार्त्ता (?) ३२६.५। गुहार—पुकार १०५.५, २६२.१। गुवा। गूवा : गुवाक—एक जाति की सुपारी १८.३, ६२.५, ३४१.१। गूद : ग्रथ्—गूथना २७.५। गोइंद : गोपेन्द्र—गोविन्द ८२.६। गोव् : गोपय्—छिपाना २३०.३, ३५८.३। गोवर : गोपुर। गोकुल—नगर-विशेष १८.२ [तथा पुनः अनेक बार], गोवार : गोपाल—ग्वाला २५.१। गोहन [अवधी]—साथ १६५.४, ३१८.४।

घाउ : घात : घाव ५८.२, ३२४.३। घात—घाव ११०.४। घाम : घम्म : घर्म—धूप ५२'१। घाल् : घल्ल् [दे०]—डालना ५६.४, ३२५.५। घोर : घोटक—घोड़ा ६४.५।

चउतरा : चत्वरक—चबूतरा ३३२.३। चंदरावलि : चन्द्रावली—जिसकी कहानी कुतुबन ने 'मृगावती' नाम से लिखी है ६०.७, ६१.५। चख : चक्खु: चक्षुष्—आंख ३४३.३। चरुवा : चरु+क—थाली, पात्र-विशेष ३४५.३। चलन : चरण ८०.१, ८५.१। चांद चीर—एक प्रकार का महीन श्वेत वस्त्र ७३.३। चाक : चक्क : चक्र ७५.१। चाचरि : चच्चरी—फाग, फाग की धूम १२६.५। चिल्हवांसु—चील्हों को फसाने का कठिन फंदा ३५७.२। चीय : चीअ—चिता ३२५.३। चीस्—चीत्कार करना १६७.४। चेनां—चीनी कर्पूर ३४१.४। चेर : चेड : चेट—सेवक ४२.३, पुत्र १२२.७, १२३.४, १२३.५, १२४.४, १२५.२, १२५.३, १२५.५ ['कुंवरू के चेर' को १२५.६ में 'कुंवरू क पूत' कहा गया है]।* चोख : चोक्ख [दे०]—शुद्ध, पवित्र २१.२।

छइल : छइल्ल—छैला १६७.५। छंद : छद्म ११३.६, २१४.३। छठि : षष्ठी १८८.१। छपय : छप्पय : षट्पद—भ्रमर १३७.४। छरहंटा : छल-कृत्य (?) २८.१। छाज् : छज्ज् [दे०]—शोभा देना ६६.१। छात : छत्र ८.१। छार : क्षार—राख ३५०.७। छाला : खल्ल [दे०]—खाल, चर्म १६४.३। छिनारि : छिण्णा+डी [दे०]—असती, कुलटा स्त्री २५१.५, २५०.४। छेक् [अवधी]—अवरोध करना ६१.७।

ज : जइ : यदा—जब १४०.६, १७१.७, २४८.४। जइ। जउ : यदि

* 'चेर' का यह अर्थ पुरानी पंजाबी में भी मिलता है, यथा : एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु। (जपुजी, पौड़ी ३०)

३७.४, १६८.७, २५६.५। जउ : यदा—जब ४६.७, १६८.३। जजमान : यजमान—यज्ञ कराने वाला, पुण्यात्मा २५.२। जमधर : यमदण्ट्रा—शस्त्र-विशेष १२३.५। जरम : जन्म—जीवन ४३.५, ६५.४। जलकुक्कुरी—जल कुक्कुटी—मुर्ग़ाबी २२.३। जलहर : जल-स्थल—जलाशय ५१.५। जाई : जाया २८४.३। जांवत : यावत्—जितना १४३.७। जाजर : जज्जर : जर्जर—कुरकुरा, खस्ता ४०.१, १४६.१। जाड : जाड्य—शीतजनित जड़ता ५१.४, ५६.३। जार् : ज्वालय्—जलाना ६६.६। जिन्—जीतना १३५.१। जूत : जुत्त : युक्त—जोड़, जोड़ी का १२५.७। जूरा : जूट : जूड़ा, केश-कलाप ६५'५। जे : पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय, अवधारण सूचक अव्यय १६७.६। जेत : यावत्—जितना १५२.५ ३८७.३। जेंव्—जीमना ३१३.३। जेवनार। जेवनारि : जीवन-वारि—रसोई ३६.२, २०६.१। जोई : योगिता—स्त्री २८.१, ३७.४, २६७.३। जोग : योग—संयोग, मिलन ३०८.२। जोगित। जोगिति : योग्यता—सामर्थ्य ३४.६, ५७.३, ६७.४। जोन्ह : ज्योत्स्ना ३१३.४। जोर : योग्य—जोड़, समकक्ष २५६.३।

झर : क्षर्—गिरना, टपकना ३४६.२। झर। झल : ज्वाला १८०.६, २४६.३। झरना : क्षरण २१.१। झरोखा : जालाक्ष ५४.३। झांख्—झांकना २३.४। झार : ज्वाला ५६.४, १३६.३। झारि [अवधी]—संपूर्ण रूप से ६३.२, १४२.३, १६३.१। झीन : क्षीण १३७.३। झुरव् : ज्वालय्—जलाना ४३.६। झूझ् : युध्—युद्ध करना ११२.१ झूझ : जुज्झ : युद्ध २६.४। झूर् : ज्वल्—संतप्त होना १६४.४।

टकोर—जिह्वा को चटखाकर निकाली जाने वाली ध्वनि-विशेष ११५.२। टंका—एक पुराना सिक्का ३०७.३। टांक : टंक—एक पुरानी तौल जिसके छः गुणित का छटांक होता था २८१.४। टांक—टंका, एक पुराना सिक्का ३३८.१ (दे० 'टंका')। टांकिनि : टक्किनी—टक्क (पंजाब) देश की स्त्री; जाति-विशेष की स्त्री २४५.१। टांड : टंड [दे०]—व्यापारी-दल, सार्थ ३४०.१। टिकइत : तिलक+आयत्त—जिसे तिलक लगता हो, सामंत ३४.७। टेसू : किंशुक १२६'४।

ठाढ : ठड्ढ: स्तब्ध—खड़ा [अवधी] ८२.३, २११.३।

डंड : दण्ड—मार्ग १४०.५। डंडाहर : दण्ड+भर—भारी डंडा १२६.३। डफार—धाड़ २३५.७। डांड : दण्ड—कर २६.७। डांग : डंगा [दे०]—लाठी, यष्टि १०६.१, २६८.१। डांगवइ : डंगवइ : द्रंगपति : एक सामान्य शासक जिसकी एक घोड़ी के लिए, जो दिन में घोड़ी रहती और

रात में अप्सरा हो जाती थी, कृष्ण ने उस पर आक्रमण किया था, जिससे उसकी रक्षा भीम ने की थी (दे० डंगवै पर्व—संपा० डा० शिवगोपाल मिश्र, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग) १९८.२। डाक : डक्क [दे०]—वाद्य-विशेष २०.४। डाभ : दर्भ ३२६.६।

ढाठी—मुंह का बंधन ८८.५। ढुक्—पहुंचना ११६.२।

त। तइ : तदा—तब १२०.६, १३२.५। तउ : तदा—तब ९७.५। तंव् : तम्—तप्त होना ११६.६। तंबोर। तंबोल : ताम्बूल—[।] सज्जित : पान २२०.५, २४५.६। तबल [फ़ा०]—बड़ा ढोल ८७.१। तरई : तारिका ३०.५। तरस् : तृष्—प्यासा होना २९२.४। तराई : तारिका २४७.४। तरास : त्रास—डर ११९.६। तरास : त्रास—चाबुक ११८.६। तरासा : त्रासिन्—त्रास देने वाला ७०.१, ७०.५। तवारा : ताप ५४.४। तायन : तर्जन—चाबुक ११४.३। तारा : तडाग—तालाब २०.१। तारि : तीक्ष्ण १३२.२, १३३.६। तारी : तालिका—सूची ६.६; तारी : ताल+इका—ताली, हथोड़ी १०४.१। तिअ : तिग्ग : तिग्म—तीक्ष्ण ७३.२। तिर् : तृ—तैरना ११६.४। तिरिच्छ : तिर्यक्—तिर्छा १३०.७। तिरीअ : तीक्ष्ण १३.३। तुंग : उत्तुंग—अत्यधिक ऊंचा ८८.५। तुचा : त्वचा २९६.१। तुराई। तुराई : त्वरा—वेग, शीघ्रता ९०.४, ३८०.१। तुल्—तुल जाना, पहुंच जाना १८१.१। तूर : तूर्य—तुरही (वाद्य-विशेष) ८७.५, १२९.५। तौर्—तौलना ३२९.७।

थनहर। थनहार : स्तन+भर—भारी स्तन ७७.२, १०७.३। थाक : थक्किअ—श्रान्त २९१.१। थाक् : थक्क्—श्रान्त होना २१९.७। थाल : स्थाल ७७.१। थाह : स्थाघ ९८.३, ३७४.३, ३८९.२। थोर : स्तोक—थोड़ा १९४.२।

दइजा : दायाद ४२.१। दखिना : दक्षिणा ३५५.३। दर : दल ९०.५। दर-मर्—दलित-मृदित होना २५.६। दह : ह्रद—कुंड, जलाशय ५१.६। दहा : दद्ध : दग्ध—जला हुआ ३३०.१। दारिउ। दार्यौ : दाडिम—अनार का दाना १८.४। दारी : दारिआ [दे०]—वेश्या, वारांगना २५२.५। दिब : दिब्ब : दिव्य—तप्त लौहादि, जिनका स्पर्श मध्य युग में अपने को निर्दोष प्रमाणित करने के लिए करना पड़ता था ६६.४। दिया : दीअअ—दीपक ४१.३, १५९.२। दियार [अर०]—प्रदेश १.१। दुअरिया : दौवारिक—द्वार-रक्षक १५९.६। दुमना : दुर्मनस्—दुःखित या खिन्न मन वाला २५५.४, ३०५.७। दुलारू : दुर्ललित—प्यार से बिगाड़ा हुआ,

अत्यधिक प्रिय ४९.३। दुहेल : दुःखित ४४.२, २३२.६। देर—धारी ३०.४। देवर : देउल : देव-कुल—देवस्थान २०.१। देवउठान : देवोत्थान ३४६.७। द्योस : दिवस १८.७।

धना : धन्या—स्त्री ७९.४। धनि : धन्या—स्त्री ८०। धर : धरा १०३.२। धाइ : धात्री—धाय, उपमाता १५७.६। धानुक : धाणुक्क : धानुष्क—धनुर्धर ४९.५, ६७.६। धाह—धाड़ ३१०.१। धिय : दुहितृ—कन्या ९६.२, १७५.१। धौराहर : धवलगृह—प्रासाद ३०.१, १५३.२।

नइ। नई : नदी १५.३, ८६.१, २०६.५, ३७९.१। नख् : नष्—लांघना २८९.५। नखत : नक्षत्र ६६.३। नगर खंड—नगर की शक्कर, सफेद शक्कर, चीनी २७.४। ननद : ननादृ—पति की बहिन ४४.६। नयर : नगर २५९.४। नरवइ : नरपति—राजा २५६.६। नाऊ : नापित—नाई ३३१.४। नांख्। नाख् : नाशय्—फेंकना १०५.६। नांग : णग्ग : नग्न १५०.३, २६२.५। नांह : नाथ—स्वामी, पति ३४४.२। नावित : ज्ञापित—दर-सनिया, वह व्यक्ति जो किसी देवी-देवता की उपासना करता और उससे आदेश प्राप्त करता [हुआ विज्ञप्त करता] है १७९.६, २६१.४। नास् : नश्—भागना ११७.१। निखात : निक्षत—निहत, मारा हुआ १५०.१। निरांतर : निरन्तर ७५.२। निचल : निश्चल २५५.३। निमानी : निर्मानित—तिरस्कृत २१२.५। नियर : निकट ३२५.३। निरंजन : निरञ्जन—निर्लिप्त ब्रह्म ३१२.५। निरु—निश्चित रूप से २२१.५। निसर् : णिस्सर् : निर्+सृ—बाहर निकलना ३१६.१। निसु [अवधी]—ठेठ, बिल्कुल १५९.६। निहार् : णिभाल् : निभालय्—देखना ९८.५। नेत : नेत्र—एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ४१.२, १५१.१। नैनूं : नवनीत—मक्खन १४९.३। नौता : निमंत्रण १४२.४। नौहार—प्राण लेने वाला, वधिक ५४.५।

पइ : परम्—हो न हो २५८.१, ३१३.७, ३७३.५। पइठ : प्रविश्—प्रविष्ट होना १८४.१। पइस् : प्रविश्—प्रविष्ट होना २११.१। पइसार : प्रवेश+डा—प्रवेश ३१६.१, ३६२.७। पउ : पद—पैर ८१.२, ३२२.३। पउदर् पद—दलित करना ११७.७। पउनारी : पद्म-नाल+इका ७६.२। पंगति : पंक्ति ८१.२। पंवरी : प्रतोली—मुख्य द्वार २४.६, २९.५, ९२.१। पंवार। पंवारी (दे० 'पवार')। पंवारा : पवाद : प्रवाद—लंबी गाथा २८.५। पखर्—अश्व-हस्ती आदि को पाखर से सज्जित करना ८९.१। पखार् : प्रक्षाल्—धोना ६८.४, ३७६.५। पखिना : प्रक्षीण—अत्यधिक दुर्बल ३५९.४।

पजर् : प्रज्वल्—जलना ३७४.७ । पटतार्—पड़ताल या जांच करना १०६.१ । पटसारी : पट+शालिका—शामियानी ४१.१ । पटुवा : पट्टवाप—बुनकर १३१.३ । पटोर : पट्ट-कूल—रेशमी वस्त्र ३१.७, ४०.३ । पडिवाह : प्रतिवाह—आक्रमणों को रोकने वाला, शत्रु को पीछे धकेलने वाला ८.२, ८.६ । पतांगी : पत्तंगी : पत्रांङ्गिका २६१.२ । पतिय् : प्रति+इ—प्रतीति करना ५८.५, २९५.६ । पतियार : प्रत्यय+डा—विश्वास ३२६.५ । पनच : प्रत्यञ्चा ६७.१ । पनवार । पनवारि : पर्णमाला—पत्तल १४२.६ । पनवारी : पर्ण+वाटिका ९२.२ । पबार् : पवाड् : प्र+पातय्—गिराना, फेंकना ८६.५, २९०.३ । पयान : प्रयाण ९०.१ । पर् : पार् : पारय्—सकना २६८.४ । परंतर : प्रान्तर ३६५.५ । परख् [अवधी]—प्रतीक्षा करना ११४.१ । परचुर : प्रचुर १२३.५ । परजर् : प्रज्वल्—जलना १०३.१ । परजार् : प्रज्वालय्—जलाना, १२०.१ । परबार् : प्रपातय्—गिराना, फेंकना १५९.३ । परसन : प्रसन्न १७६.७ । पराकिरिति : प्राकृति—आकृति, रूप ६३.७ । पराय् : परा+अय्—पलायित होना, भागना २९.२ । परि—प्रकार से, भांति से १५८.७, १५९.३, १७१.३, २२३.५, ३४२.७ । परि : परम्—हो न हो ३३९.४ । परिछाहीं : प्रतिच्छाया १९२.१ । परिछेव : परि+छिद्—काटना, काटकर अलग करना २१५.३, २७७.३ । परिमल—एक प्रकार का सुगंधित लेप २७.२ । पलान् : पर्याणय्—पर्याण (ज़ीन आदि) से सज्जित करना ४०.५, ८७.६ । पलुह् । पल्हुव् : प्ररुह्—अंकुरित होना, हरा-भरा होना २१३.२, ३२४.५ । पवनि—पाने वाली जातियां, जो विवाहादि के अवसरों पर नेग-चार (पुरस्कार) आदि पाती हैं २४५.५ । पवान : प्रमाण—तक ८२.२ । पवार : प्रवाल—मूंगा २७.७, ३४१.४ । पसार् : प्रसारय्—फैलाना ३७१.३ । पसार : प्रसार ४१६.५ । पसाव : प्रसाद—कृपा १२०.२, ३०७.१ । पसेज : प्रस्वेद—पसीना ६६.३ । पहिय : पथिक ३३९.२ । पाई : पादत्री—जूती, चप्पल ८५.१ । पाइंत (दे० पायंत) । पा : पाअ : पाद—पैर ८१.५, १८२.५ पांडे : पंडिअ : पण्डित ३६.२ । पाट : पट्ट—फलक, सिंहासन ८.१ । पाट—पटका, कमरबंद ११४.२ । पाउ : पाअ : पाद—चरण ३५.१ । पाऊ : पाउअ [दे०]—वस्त्र १२३.२ । पाख : पक्ख : पक्ष २८४.२ । पाखर : पक्खर [दे०]—सन्नाह, सन्नाह-सज्जित सैनिक १३३.३ । पाज : पज्जा : पर्याय—अधिकार-विशेष ३६८.२ । पाट । पाटा : पट्ट—फलक, पीढ़ा, सिंहासन १५१.५ । पाट—पटसन, रेशम १८७.१ । पाटन : पत्तन—महानगर ३६०.२-५ । पाथर : पत्थर : प्रस्तर ६२.४ ।

पाधर : पद्धर—रण में अप्रवृत्त सैनिक या भृत्य १०४.२ । पान : पण्ण : पर्ण—पत्ता २२.४, ८३.४; —सज्जित तांबूल २६.३ । पापधि : पापद्धिक—वधिक, बहेलिया २२३.५, २५४.७ । पापरधि : (दे० पापधि) । पायंत : पादत्र (?)—प्रस्थान का प्रतीक २७७.७, ३१९.१ । पायक : पदातिक—पैदल सैनिक या सिपाही ४९.५, ८६.३, १०४.२ । पार् : पाड् : पातय्—गिराना २३६.५ । पार् : पारय्—सकना १२१.५, २८१.७, ३२६.३ । पारधि : पारधी : पापद्धिक—वधिक, बहेलिया ६७.२, १४२.६, १४३.१ । पालंक । पालिक : पर्यंक—पलंग १९५.१, ३८९.७ । पावरी : पादत्री १६४.२ । पावस : प्रावृट्—वर्षा २७५.२ । पास : पार्श्व १७७.७ । पिछउरी : पश्च+पटी—पीठ पर डाला जाने वाला वस्त्र-विशेष, चांदनी १३५.४ । पियासा : पियासत्—प्यासा ३२८.२ । पियर : पीत+डा—पीला २२६.३, ३६१.३ । पिरथमी : पृथ्वी १.६ । पिरम : प्रेम ७२.१, २८९.१, ३२३.१, ३२४.१-७ । पीहर : पितृगृह—मायका २९५.७ । पुंख—बाण का अग्र भाग १८५.५ (दे० फुंक) । पुरग : पुडग : पुटक—आच्छादन ३३.६ । पुरइनि : पुटकिनी—कमलिनी २२.४, ३४०.४ । पुरुस : पुरुष—पुरुष की लंबाई (जो ३½ हाथों की मानी जाती है) २३.१ । पुनिउं : पूर्णिमा २६६.३, ३५५.२ । पूर् : पूरय्—पूर्ति करना, भरना ८४.४ । पेखन : प्रेक्षणक—तमाशा २८.१ । पेटार : पेटक+डा ३३८.३ । पेल् : प्रेरय्—ठेलना, ढकेलना ३५८.२ । पैत—जुए का दाव २१४.२ । पोइनि : पद्मिनी ७७.४ । पोखर : पुष्कर—तडाग २०.१ । पोर : पर्वन—गांठ ८२.३ । पोह—गोबर की छोत, बैल की विष्ठा २३१.१ । पौनि (दे० पवनि) २५.५ ।

फटिक : स्फटिक—बिल्लौर १६४.१ । फतिंगा : फडिंगा—पतिंगा ३३.७ । फर : फड्ड : स्पर्धक (?)—फड़, जुए की बिछी हुई बाज़ी १०५.२ । फरहरा [अवधी]—पताका १२३.१ । फांद : फंद : स्पन्द—फाग १९०.७ । फांस : पाश—फांसी का फंदा १८५.६ । फिट्—नष्ट होना ३१८.२ । फूल : फुल्ल—खिला हुआ पुष्प २७.१, ३८५.३ । फुंक : पुंख—बाण का अग्रभाग ११५.५; २९३.७ (दे० पुंख) ।

बइस् : उपविश्—बैठना ६३.२, ३४२.२ । बइसाखी—वह लकड़ी जिसे टेक देकर कमज़ोर पैरों वाले चलते हैं ३६६.३ । बउसाउ : व्यवसाय—पुरुषार्थ ७६.५, १८३.३ । बंदन—तिलक, रोली २५०.२ । बकति : वक्ति—वाक्य, कथन ७.२, १६९.३, १९६.६ । बखान् : बक्खाण् [दे०]—वर्णन

करना २९.१, ३४.२, २३०.४। बटपार : वट्टपाडय : वर्त्मपातक—डाका डालने वाला ५६.६, ३१८.१। बटियां—पीसकर बनाया जाने वाला व्यंजन १४५.२। बडवा : वडबा—घोड़ी ११५.२। बतीसी—बत्तीस दांतों की पंक्ति १३७.२। बध् : वृध्—बढ़ना १६.७। बधाई। बधाव : वर्धापण—हर्ष-सूचक संगीत-वाद्यादि का समायोजन १३५.६, १६३.१, ३३८.६। बनासपति : वनस्पति १५०.६। बनिज : वाणिज्य ३७२.१। बनिजारा : वाविज्य-कारक २५.३। बबिहा : पपीहा १९.२। बर : बल ९५.५, १०९.७। बरउत : वर+उत्क—वर होने का आकांक्षी ३४.५। बरत्—[रस्सी] बटना १८७.१। बरदी—बैल, बैल का बोझा—४२.७। बरिक्—बचना ५४.५। बरन : वर्ण—रंग २२९.२। बरु : वरम्—अच्छा १०१.३, २६०.१, २७२.४। बरुवा : वटु—विद्यार्थी २८.२। बरोक : वरौत्क्य—वरिच्छा ३३७.६। बहुर : व्याघुट्—लौटना, वापिस होना २९२.६। बहुयरि: वधू—[पुत्र-] वधू २२९.३। बाइ : वापी—वावली १८.२। बाउ : वापी—बावली ९२.४। बाउर : वाउल। वातूल—बातग्रस्त, पागल ९८'२, ३१६। बांगर : बंक : वक्र—कुटिल ४७.७, २५२.१, ३९७.३। बांठ : बंठ [दे०]—अविवाहित, स्नेह-रहित ६०.४। बांध : बंध—वह वस्तु जो किसी के पास बंधक (गहन) रखी गई हो ३०८.१। बांव्—वाम पक्ष में रखना, उपेक्षा करना १४२.१। बाखरि : वक्खल+इका—आच्छादित गृह ४९.५। बाग : वल्गा—लगाम ९०.५, २५७.६। बाज : वर्ज—वर्जित २७९,२। बाज् —भिड़ना, पहुँचना १०२.१। बाजिर : वाद्यकर—बाजा बजाने वाला ५४.१। बाट : वट्ट : वर्त्म—मार्ग ३६०.१। बात : वत्ता : वार्त्ता—३०१.१। बादर : वार्दल—मेघ २७५.४। बान : वण्ण : वर्ण—रंग २३.४, २५०.२ : जाति १५१.२। बान : वण्ण : वर्णक—बाना, पहनावा ३३६.१। बानी : वण्णिआ : वर्णिका—बानगी, नमूना २२४.३। बामी : वल्मीक—बिल ३०९.३। बार् : वार्—वारण करना २५०.५। बार : वार : द्वार २९.१। बार : वार—दिन २३४.३ : बार : बाल—बालक १४२.३, १५४.२, ३६३'७। बार : वेला—देरी १६४.५। बारक : बालक १८५.३। बारी : बालिका २४१.५। बारी : वाटिका १५०.२। बास् : वास्—[पक्षियों का]बोलना १९.१, १९.७। वासिग : बासुकि १३.१। बासी : वासित—वह जो ताज़ा न हो, पहले का बचा खुचा हो २५३.३। बासुगि—दे० 'बासिग'। बाह् : वाह—डालना ३१४.३, ३१७'५। बिंद् : विद्—जानना ६३.७। बिंदुका : विन्दु ७४.१। बिगोव्—तिरस्कार करना ५१.५, २७३.३, ३४७.५। बिटार :

विट+डा—चरित्रहीन व्यक्ति २५२.६। बिड : विट—चरित्रहीन व्यक्ति, धूर्त २२९.७। बिथर् : वित्थर् : वि+स्तृ—फैल जाना २६०.६ बिधांस् : विध्वस्—विध्वस्त करना ७५.७, २५९.१। बिनती। बिनाती : विज्ञप्ति—कथन, निवेदन १४०.७, ३२९.६। बिनान : विज्ञान १०.३, २५.४, २९.१, ३०.३, ५६.२। बिपाउ—पाद-हीन, पंगु, निश्चेष्ट ६४.७। बिरवा : विटप २१०.६। बिरार : विडाल १५४.६, २२१.२। बिरिछ : वृक्ष २३८.२। बिरी : वीटिका—[पान का] छोटा बीड़ा (दे० 'बीरी')। विरुद्धा : विलुब्ध ५३.६, ५३.७, ३४०.७। बिला : वि+ली—विलीन होना। १७१.३। बिलोअ : वि+लोड्य—मंथन करना २५२.७। विसर् : वि+स्मृ—भूलना ७२.२। बिसव् : विश्रम्—विश्राम करना १८६.७, १९२.५, २७८.२, ३९०.७। बिसहर : विषधर—सर्प ६५.१, २५३.५, ३१४.५। बिसाउ : विस्वाद २३६.६। बिसार : विशाल ३५.२, ८७.५। बिसार : विषाक्त ५८.१। बिहफइ : विहप्फइ : बृहस्पति—एक स्त्री-पात्र [जो कथा में अनेक बार आया है]। बिहर् : विहड्। विघट्—टूटना २२१.५। बिहाऊ। विधावित—उल्लसित, प्रस्फुरित ५४.१। बिहाव् : वि+हा—परित्याग करना, व्यतीत करना ३९.५। बिहेर् : विहेड् : वि+हेटय्—पीड़ा पहुँचाना, मारना २५४.७। बीजु।बीजुरी : विज्जु : विद्युत १५८.७। बीरा : बीलय—ताटंक ८४.१। बीरा : वीटक—[पान का] बीड़ा २६.५, ४९.२, १११२.६, ३०८.३। बीरी : वीटिका—[पान की] बीड़ी २४०.२ (दे० बिरी)। बुकाव् [अवधी]—चाबना, फांकना ९०.३। बुझ् : विधम्—[अग्नि का] शांत होना २०१.१। बुझाव् : विध्मापय् [अग्नि को] शांत करना २३९.७। बुडकाव् : ब्रोडय्—डुबाना १३.२। बूड् : ब्रुड्—डूबना ७८'७, २८८.७। बेकरार : बेक़रार [फ़ा०]—बेचैन १३८.१, १९५.४, ३४७.४। बेगर—अलग ३१.२। बेडिनि : विटा—नटिनी, अवधी-क्षेत्र में अब भी बेडियों-बेडिनों की एक जाति है, किन्तु वह प्राय: नाचने-गाने का व्यवसाय करती हैं, नटों-नटनियों की जाति अलग है १९१.४। बेना : वीरण—उशीर, ख़स २७.३, ३४१.२। बेलक—एक विशिष्ट प्रकार का बाण ११९.२। बेसव् : विसाध् (?)—क्रय करना ५८.४। बेसवार : वेसवार—धनिया आदि मसाला ४२.६, १४५.६। बेसहनि : विसाधनीय—क्रय की जाने वाली वस्तु १५६.१। बेसा : वेश्या २५२.५। बेसाह् : विसाध्—क्रय करना १८७.१, ३६०.७। बैन : वयन : वचन ३६०.१। बैनां : विवाहादि के अवसरों पर संबंधियों आदि को दी जाने वाली मिठाइयां २६८.१। बैसंदर : वैश्वानर—

अग्नि १४५.१, ३१०.६ । बोर् : ब्रोडय्—डुबाना २७२.६ । बोहित : बोहित्थ —जलपोत ६८.५, ११६.४ ।

भंडहाई—भंडता २३१.४ । भंति : भक्ति—प्रकार १९५.५ । भर : भट —योद्धा १३९.३ । भररा—वाद्य-विशेष २०.४, शैव साधु-विशेष १.२ । भव् : भ्रम्—चक्कर लगाना, फिरना २४.७, ९८.५ । भांग्—भग्न होना २६०.१ । भात : भत्त : भक्त—उबाला हुआ चावल १५२.१ । भिनुसार—प्रभात २७८.१ । भामनगारी : भामनकारिन्—भुलावे में डालने वाला २७.६ । भीम—प्रसिद्ध पांडव योद्धा २५७.३ । भुआ : भुजा ७६.१, १९१.१ । भुगुति : भुक्ति—भोग, भोजन ५.२ । भुजंग—भ्रमर ७४'२, २१७.१, २१७.६, २१७.७ । भुव : भुजा २२६.१ । भुवंग : भुजग—सर्प ३०८.७ । भूंज् : भुज्—भोग करना २६.६, ६१.७, ३१३.३ । भेंभर : भिन्भल : विह्वल ४८.२, १६८.२ । भोज : प्रसिद्ध मध्य-युगीन शासक २५७.३ ।

मंख् : मक्ख् : म्रक्ष्—मांख करना, ममता करना २२४.६ । मंजीठि : मञ्जिष्ठा ३४१.१ । मंझान : मध्याह्न ४९.३ । मंझारी : मार्जारी—बिल्ली २२१.२ । मंत : मंत्र—परामर्श १२१.५ । मंसउरा : मांस-वर्त्तक—मांस का बना हुआ बड़ा १४५.२ । मढ : मठ—मंदिर २०.१ । मयन : मयण : मदन —मोम १८७.२, ३४१.१ । मया—ममता १२४.१ । मरार : मराल १५४.७ । मरोह—करुणा २०१.१ । मसवास : मास-वास—एक मास का कल्प, जो किन्हीं पर्वों पर [प्रयागादि] तीर्थों में किया जाता है २५३.३ । मसियरा मसियार : मशाल [फ़ा०] १८७'५ । महता : महामात्य (?) ९०.६ । महादे : महादेवी ३१.३ । माअ : माइअ : मात—मरा हुआ ३४३.१ । माई—सहेली, सखी २८६.२ । मांकर । मर्कट : कथा का एक पात्र ३९७.४ । मांछ : मत्स्य —मछली २२.१ । मांज् : मज्ज् : मृज्—साफ़ करना ८१'५ । मांझा—मध्य आयु वाला व्यक्ति (?) ९३.२ । माख : मक्ख : प्रक्ष—स्नेह २०२.२ । मारा : माला २४८.२ । मारि—मरी १५.५ । मारी : मालि : मालिन्—पुष्प-व्यवसायी २७.४, ३८४१ । मिरिघ : मृग १४३.१ । मीचु।मीचु : मृत्यु १९९.६ । मुगेर : नगर-विशेष, जो कलिंग देश में था ३३५.४ । मुतिसिरी : मौक्तिक-श्री—मोतियों का आभरण-विशेष १४८.३ । मेंढ : मेढ : मेष—भेंडा १४३.४ । मेघवना : मेघवर्ण : बादल—के रंग का वस्त्र-विशेष ८३.२ । मेछ : म्लेच्छ ३४५'७, ३४९'६ ।मेद।मेध : मेद—एक प्रकार का परिमल, जो किसी जन्तु की चरबी से बनाया जाता था २७.३, ३१.४, १९४.३ । मेराव : मिलाप १६०.३ ।

मेल् [दे०]—छोड़ना, डालना १९०.५, २६०.७, २७२.१ । मल्हान—झूमकर चलने की गति ८१.३ । मेहरी : महिलिका—स्त्री २९७.५, ३१८'२ । मैंगर : मदगलित—मदमत्त ८९.६ । मैनां मांजरि : मदन-मञ्जरी : कथा की पात्र-विशेष, लोरिक की विवाहिता स्त्री २८२.६, ३५७.७ । मैमंत : मदमत्त ११३.१ । मोअ् : मोच्य—मुक्त करना, बिताना ५१.२ । मोंख : मोक्ष ९७.५, मोती : मौक्तिक १६६.१ मोकर् : मुच्—मुक्त होना २६२.४ । मोकराव् : मोचय्—मुक्त करना ४२.७ । मोर् : मोड् : मोटय्—मोड़ना ७९.२ ।

रइनि : रयणी : रजनी २२.७, १५५.१, ३४६.१ । रई : रइअ : रचित —रंजित (?) २२०.४ । रजाएसु : राजादेश ६१.२, ९३.७ । रयन : रत्न १४४.३ । रर् : रड् : रट्—चिल्लाना १५४.७, २८२.७ । रबं् : रम्—रमण करना २३०.५ । रवनि : रमणी १९५.४ । रसोइ : रसवती—रसोई १४५.१ । रहरा : रभस्+डा—हर्ष, सुख ५०.६, ६१.५ । रहंस : रभस्—हर्ष, सुख ८५.७. १८६.३, २५५.७, ३९३.७ । राउत : राअउत : राजपुत्र ८७.१ । राउर । राउल : राजकुल—राजभवन ३३२.१, ३६५.५ । रांक : रंक —दरिद्र ३४६.५ । रांध : राद्ध : रद्ध—पक्व, पकाया हुआ ९३.३ । रांध : रद्धि [दे०]—महान्, श्रेष्ठ ४४.५ । राध : राध : राद्ध—पास में आगत ८३.१, २४८.६ । राग—टांगों का कवच ११९.५ । राज्—शोभित होना १५६.१ । राव् : रांव् : रम् २४९.६, २५३.४, २८४.४, ३४९.६ । राजनेत : राजनेत्र—एक जाति का चावल १४८.३ । राट : राठु : राष्ट्र—राज्य १२.५ ३४०.४ । राढ : रड्ड [दे०]—सिसक कर गिरा हुआ, शोकादि के कारण क्षीण हुआ ३९६.७ । रात : रत्त : रक्त—लाल, सुंदर ४४.३ । रात : रत्त : रक्त—अनुरक्त ५६.५, २०८.७ । राय : रात : रक्त—अनुरक्त ३५२.७ । रावत : राजपुत्र—सामंत २५.४ । रावट—एक प्रकार का काला और चिकना पत्थर २१.७ । राही : राहिय : राधित—अभीप्सित ९५.७ । रिहारी : रेखा (?)—कार्य-शैली (?) ४५.२ । रूअ : रूप १८५.७ । रूंख : वृक्ष २०१.७ । रूप : रौप्य—चांदी ४६.३, ३४१.४ । रेस [दे०]—वास्ते, लिए २६२.४ । रेह् : लिख्—[चित्र में] लिखना, अंकित करना १९३.२ । रोझ : ऋष्य —नील गाय १४३.२ । रोमथ् : रोमंथय्=जुगाली करना । चाबे हुए को चाबना ३६८.६ । रोहितास : रोहिताश्व—अग्नि, जिसके वाहन लाल घोड़े माने गए हैं १०३.१ ।

लग—काया, शरीर ८२.१ । लखन : लक्षण ६३.५ । लहन—प्राप्य,

प्रारब्ध ३१४.७ । लांछन : लाञ्छन—कलंक २६६.१ । लाध् : लभ् (?) प्राप्त करना ३४०.४ । लिलार : ललाट १२.२ । लिह : लिख्—लिखना १९३.५ । लुक् : लुक्क् [अवधी]—छिपना ९०.७ । लुर् : लुण्ठ्—लोटना ६५.१ । लेजु : रज्जु—रस्सी २३४.३ । लोट् : लुण्ठ्—लोटना ३८८.७ । लोयन : लोचन १८१.५, २२०.५ ।

वानी : पानीय २१३.२ ।

सइं : स्वयं १३०.२ १४०.६, ३३९.७ । सउं : समम्—साथ ४८.५, ११२.७, १२३.७, १६३.४ (दे० सेउं) । सउतुक : सप्रत्यक्ष (?) १७१.१ । सउर : सउड [दे०]—पलंग का गद्दा ४२.५ । संकर : संकट १०४.५ । संकिरित : संस्कृत १२.४ । सकरी : शृङ्खला ८४.० । सकार् : सक्कार—सत्कार करना, सम्मान करना ३५.४ । सच् : स+चि—उपचय करना १९३.२ । संजोइ : संयोग—सज्जा, रण-सज्जा और उसके उपकरण १०२.२ । संजोग (यथा 'संजोइ') ३०१.२ । संझा : सं+ध्या—मिलना ३८६.१, ३८९.२ ३८९.५, २९१.६ । संतावा : सताविअ : सतापित—संतप्त किया हुआ २४९.४ । संतार : संतरण ३६३.३ । संदूर : शार्दूल—शरभ १८१.२ । संनेह : सनेह : सन्देह ७४.५ । संपर्—स्नान करना ३७५.५ । संभार्—संभालना, स्मरण करना १३९.१ । सपूरन : सम्पूर्ण ३०८.६ । संवन । सवन : श्रवण—कान ६२.१, १८०.७, ३४०.१ । संवर् : स्मृ—स्मरण करना १८९.२ । संवार् : संभार्य—मसाला आदि से संस्कृत करना, निर्माण करना १८३.५ । सगर : सकल २३.५, १४९.५ : सगाई : स्वकत्व—सगपना, संबंध ३५.३ । सजन : स्वजन १८६.५ । सती—सत्यनिष्ट २०५.१ । सतुर : सत्वर—त्वरा के साथ ३१८.४ । सद् : शब्द २०१.३ । सनीछर : शनैश्चर ३२.५ । सपूरन : सम्पूर्ण ३०८.६ । समंद् : समद् : सम्+आदा—भेंट करना, विदा करना १९०.३, ३३८.३ । सयंसार : संसार १४.५, १४.६, ३२.२ । सर : शर—चिता १०१.७ । सर् : सृ—जाना १०४.३ । सरइ : शराव—सकोरा ४३.५ । सरंगा—एक प्रकार की नाव २८७.२ । सरग : स्वर्ग—आकाश ८४.२ : सरभरि—सादृश्य २४२.२ । सरागति : शराक़त [अर०]—जमात ४१.७ । सराप : शाप ३१९.३ । सलोनी—भुजाओं का आभरण-विशेष २६०.३ । ससिहर : शशधर—चन्द्रमा ६६.५ । सह—समस्त २६४.२, २६७.३, ३५१.२ । सहदेउ : सहदेव—प्रसिद्ध पांडव विद्वान् २५७.२ । सहदेसी : सदेशीय (?)—एक ही देश का निवासी ३७०.५ । सहरी : शफर+इका—छोटी मछली ५१.६ (दे० सिहरी) । सहार : सहकार—आम की एक विशिष्ट जाति ३५९.३ । सहार्=

संभालना ३६२.६ । सही : सखिन्—सखी १६६.१ । सांझि : सन्धि=शान्ति ३८२.६, ३८३.५ । सांठि : संठिइ : संस्थिति—पूंजी ३२६.२ । सांध् : सं+धा जोड़ना, लगाना, ३२३.१ । सांभर : सांभल : शम्बल—मार्ग के लिए ली गई भोजनादि सामग्री ८६.६, २०५.६ । सांसउ : संशय ११७.१, २६३.१ । सातु : सक्तु—सत्तू ४५.३ । साथ : सत्थ : सार्थ—समूह, प्राणि-समूह ३६२.४ । साथरी : स्रस्तरी—चटाई २५७.४ । साथी : सार्थिक—सार्थ का व्यक्ति ३२२.१ । साध : सद्धा : श्रद्धा—आकाङ्क्षा ४४.४, १३६.७, २११.५ । सान : शाण—शान का पत्थर ६७.२ । सायर : सागर ३१६.४, ३४४.२ । सार्य—संभाल करना, संवारना ७६.४ । सारि : शालि—चावल १४८.१ । सारी : सारिका—मैना १९.२ । सारी : साडिआ : शाटिका—साड़ी १३९.२ । साल् : शल्यय्—शल्य के समान पीड़ा पहुँचाना ५८.२ । साहन : साधन—सैनिक बल २३.७, ३०२.३ । साहनी : साधनिक—सेनापति ८६.३ । सियर : सीय+डा : शीत ४६.४ । सियार : शृगाल—स्यार १५४.६ । सिरज् : सृज्—सृष्टि करना १.१-५, २.१-६, ३.१-६, ४.१-६, ५.१-६ । सिरवाहि : शिरो व्याधि ५६.३ । सिराय्—पूरा पड़ना, सार्थक होना ४५.७, २१८.७ । सिराव् : शीतलय्—शीतल करना २११.५ । सिलउटी : शिला+पट्टिका—सिल ७६.३ । सिहरी : शफरिका—मछली २२.२ (दे० सिहरी) । सीउ : सीअ : शीत ५१.२ । सींग । सींगा : शृंग—सींग के आकार का वाद्य-विशेष ८७.५, १२९.५ । सींगी : शृंग—सींग का बना हुआ वाद्य-विशेष २०.५ । सींप : सुत्ति : शुक्ति—सीपी ४८.४ । सींह : सीह : सिंह २९.१, ३६.१ । सुखासन—एक प्रकार की पालकी या पालकी-गाड़ी (तुल० 'रामचरित मानस' २.१८६) ४८.७, २४६.६, ३०७.२ । सुगाय् : शुकाय्—शुक की भांति संदेह या अविश्वास करना २५०.६ । सुद्धि : शुद्धि—समाचार ३८६.४ । सुभर—भली भांति, भरा हुआ, भरपूर २१.१ । सूक : सुक्क : शुष्क ९१.१ । सूग : शूक—करुणा ३५५.६, ३५७.१ । सूत : सुत्त : सुप्त—सोया हुआ १९५.४ । सूध : शुद्ध—शांत २६५.७ । सून—प्रसून, पुष्प २७.१, १६५.६ । सूवा—शुक १९.२ । सेउं : समम्—साथ २४९.१ (दे० सउं) । सेंधउरा : सिन्दूर पूर—सिन्दूर का पात्र ७७.२, २४७.१, ३८८.१ । सेवाइ : सेवार : सिवा [फ़ा०]—अतिरिक्त, अधिक १७.६, ६२.५ । सोनी : सौवर्णिक—कलशों-दीवालों आदि पर सोने का पानी ढालने वाला २५.४ । शोर : शोर [फ़ा०] ३०९.६ । सोवन : सोवण्ण : सौवर्ण—स्वर्ण-निर्मित १३७.१, २४८.२ । सोहाग : सौभाग्य—सुभगता ६४.१, ७४.२ ।

हकार् : आकार्य—पुकारना १०४.७ । हंकार : हक्कार : आकार—पुकार ८६.३ । हटतार : हट्ट+ताल—हाटों में ताला लगाने की स्थिति ६२.१ । हर : गृह—घर ३५४.७ (दे० पद्मावत ३७८.६) । हरि : हडि—[काष्ठ की] बेड़ी ७४.३ । हरुव : हलुक : लघु+क—हल्का २३३.२ । हांडी : भाण्ड+इका—पात्र-विशेष १५२.६ । हांस : हंस १४६.१ । हार्—थकना २७६.४ । हिर्—हिलना १६६.४, ३३६.४ । हिरि : ह्री—लज्जित होना ११८.७ । हिरगाना—हिलग करना, पास लाना २४२.४ । हिलोर : हिल्लोल—बड़ी लहर २४५.२ । हींड्—चलना-फिरना २५.६ । हुल्हस् : उल्लस् उल्लसित होना १.७ । हेठ : हेट्ठ : अधस् (?)—नीचे का भाग २१२.७ ।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१८	१८×२०=३६०	१८×४=७२
१०	१०	जान	षान
१५	१६	वाणी	वर्णिका (वर्ण)
१६	१६	(अंबराऊं)	अबराउ (अंबराऊं)
२८	१८,१६	सात, सातो	साठ, साठो
४२	२८	श्रेस्ठतर	श्रेष्ठतर
४३	११	'वह'	'दहु'
४६	२८	कह	कइ
४७	२६	देखुन	देखन
५०	११-१२	व्रजाशनि	वज्र-अशनि
५८	२७	जब चला	जब दिन चला
७१	३०	के	क
७३	१३	मेहरहे	मोहरए
८१	१७	भी	और
६३	८	मांगौ(ग)हु 'सो'	'मांगौ(ग)हु' सो
१०३	१	ओर	लोर
११५	१	बाद में	पहले
१२२	२४	(पुत्र)	(पुत्र) का
१२६	१२	बिजली	बिचली
१३०	३०	पार	पाखर
१३८	१	नियन्त्रण	निमंत्रण
१५२	१८	डकारा	डफारा
१५२	२६	बे	ब
१६३	३०	ऐसी	ऐसे
१६४	७	भेंमरु	भेंभरु
१६६	५	भैंमर	भेंमर
१७१	२८	देई	दई
१७६	२०	है । तुम्हें	तुम्हें
१६२	६	धई	दई

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९६	२९	धहि	धनि
१९७	३०	छटि	छूटि
१९८	२०	[स्वामि-द्रोह]	[स्वामि-द्रोह में]
२०२	५-६	रंग···तू [अपने]	तू अपने रंग···
२०६	१७	'सेज (?)'	'सेज रवंहु रै (?)'
२०७	२६	उरौहु	उतरौहु
२०८	२५	उठा	उटा
२१०	९	त त(क?)बही	त (क ?)बही
२११	१०	पत्र	पर
२१९	२५	नैन न	नैनन
२२५	४	मैनां	खोलिन
२२६	२५	बर	मर
२४१	१	'आपैहु(प)'	'आपै(प)हु'
२४८	२९	कहो	कहे
२५१	१०	हाग्र	हार
२५२	२	अंबरबां(व)हि	अंबरांब(व)हि
२५६	१	हारी	हार
२७२	१५	ग्रहा	ग्रह
२७६	१०	अतर	ऊतर
२७७	८	दूं	उत्तर दूं
२८८	९	का	को
२९६	२१	जाई	जोई
२९६	२३	देई	दई
३०६	१३	अगले	कडवक ३३१ इ
३०७	१९	सावन	सरवन
३२४	१२	जो वह	जो
३२४	२६	बर	मर
३२८	१	मी०	म०
३४३	८	फूल	फूले
३४९	१४	अ(अउ)	औ(अउ)
३७२	२३	बेलों का	बैलों का
३८१	५	जाउ	जउ
४४०	२४	प्रक्ष	म्रक्ष

लेखक के अन्य ग्रन्थ

१. **तुलसी-संदर्भ** (तुलसी-विषयक शोध-निबंध-माला)
विवेक कार्यालय, प्रयाग। १९३५

२. **तुलसीदास** (डी० लिट्० के शोध-प्रबंध का हिंदी रूपांतर)
हिंदी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय। १९४२
(चतुर्थ संस्करण १९६४)

३. **अर्द्धकथा** (भूमिका तथा संपादित पाठ)
हिंदी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय। १९४३

४. **हिंदी पुस्तक-साहित्य** (१८६७-१९४२)
हिंदुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, प्रयाग। १९४५

५. **रामचरितमानस का पाठ** (तुलसी-ग्रंथावली, भाग १, खंड १)
हिंदुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, प्रयाग। १९५०

६. **रामचरितमानस** (तुलसी-ग्रंथावली, भाग १, खंड २)
हिंदुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, प्रयाग। १९५०

७. **जायसी-ग्रंथावली** (भूमिका तथा संपादित पाठ)
हिंदुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, प्रयाग। १९५२

८. **बीसलदेव रास** (भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
हिंदी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय। १९५३

९. **नंद बत्तीसी** (भूमिका तथा संपादित पाठ) हिन्दी अनुशीलन,
भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग। १९५७

१०. **छिताई वार्ता** (भूमिका संपादित पाठ तथा अर्थ)
नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी। १९५७

११. **लोरकहा** (भूमिका तथा संपादित पाठ)
क० मु० हिंदी विद्यापीठ, आगरा। १९५९

१२. **मधुमालती**—मंझन कृत (भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
मित्र प्रकाशन प्रा० लि०, प्रयाग। १९६१

१३. **रासो-साहित्य-विमर्श** (रासो-परंपरा से संबंधित शोध-निबंध-
माला) साहित्य भवन प्रा० लि०, प्रयाग। १९६२

१४. **पृथ्वीराज रासउ** (भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी। १९६३

१५. **राउलवेल और उसकी भाषा** (भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
मित्र प्रकाशन प्रा० लि०, प्रयाग। १९६३

१६. **पद्मावत** (भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग। १९६३

१७. **मधुमालती**—चतुर्भुजदास निगम कृत (भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी। १९६४

१८. **जिणदत्त-चरित** (भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
सहसंपादक—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल,
श्री महावीर अतिशय क्षेत्र, जयपुर। १९६६

१९. **वसंत-विलास और उसकी भाषा** (भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
क० मु० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा। १९६६

२०. **कुतब-शतक और उसकी हिंदुई** (भाषा, भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
भारतीय ज्ञानपीठ, कलकत्ता। (प्रेस में)

२१. **मृगावती**—कुतुबन कृत (भूमिका, संपादित पाठ तथा अर्थ)
प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा। (प्रेस में)